Review of Literature

ISSN: 2347-2723 Impact Factor : 2.0260(UIF) Volume - 4 | Issue - 5 | December - 2016

मानसिक शांति हेतु संगीत एवं अन्य ललित कलाओं का महत्वपूर्ण योगदान

डॉ. मीता कौशल
रीडर–संगीत विभाग

प्रस्तावनाः

मनुष्य ने निसर्ग से युद्ध करते हुये अपने और जन–मन के स्वास्थ्य हेतु जिस सौन्दर्यबोध को अर्जित किया है, उसको कला की संज्ञा से अभिहित किया गया है। यह सौन्दर्य–बोध अथवा कला–बोध मनुष्य के शोक और श्रम के परिहार में उपयोगी सिद्ध हुआ है, एतदर्थ मानव–जीवन में इसकी महत्ता बढ़ गई है। कलाओं की गणना करते हुये किसी ने कलाओं की संख्या 72 किसी ने 64 तो किसी ने 16 बताई है। भगवान श्री कृष्ण को 16 कलाओं से युक्त पूर्णावतार कहा गया है। किन्तु कलाओं की सामाजिक उपयोगिता को देखते हुए कला को दो वर्गो में रखा गया है– उपयोगी कला और ललित कला। संगीत ललित कलाओं के अन्तर्गत आता है, जिनकी संख्या पाँच है और उनमें सगीत को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। यह क्रम इस प्रकार है– (1) वास्तु या स्थापत्य कला (2) मूर्ति कला (3) चित्रकला (4) काव्य कला और (5) संगीत कला।

चूँकि संगीत स्वर, लय, गति और श्रवण से सम्बन्ध रखता है, इसलिये यह अन्य कलाओं की अपेक्षा अधिक अमूर्त तथा मानव–मन को शीघ्र प्रभावित करने वाला सिद्ध हुआ है। जहाँ तक वास्तु, मूर्ति और चित्रकला का सम्बन्ध है, ये कलाऐं दृष्टि, दृश्य, मूर्तता और स्थूलता से अधिक सम्बन्ध रखती है। काव्य कला और संगीत कला सूक्ष्म की ओर गमन करती हुई देखी जाती है।काव्य कला में दो शब्दासें का होना आवश्यक है, जबकि संगीत कला में स्वर ही पर्याप्त है। यह बात विलग है कि स्वर के साथ शब्द मिलकर उसे और अधिक प्रभावशाली बना देता है। इस प्रकार संगीत अपनी श्रेष्ठता के कारण काव्य को भी एक प्रकार से प्राणवायु प्रदान करता है।

ऐसी महत्वपूर्ण संगीत कला, जो मनुष्य को एकान्तिकता, आनन्द और निमग्नता की ओर ले जाती है निश्चित रूप से मानसिक शान्ति प्रदान करने वाली होती है। निमग्नता की अवस्था में जो आनन्द की अनुभूति होती है, यह श्रम का परिहार करने वाली तथा आगे कार्यकुशलता को बढ़ाने वाली बन जाती है। यहीं कारण है कि अनेक बार श्रमिकों को अथवा दूर की मंजिल को जाने वाले पथिकों को हम स्वयं गाते हुये या विज्ञान के उपहारों के परिणाम स्वरूप संगीत सुनते हुये देख सकते हैं। यह बात स्पष्ट करती है कि संगीत का सहारा लेकर मनुष्य मानसिक शान्ति प्राप्त करने का प्रयास करता है और इस प्रयास में उसे मानसिक शान्ति की उपलब्धि भी होती है।

सगीत के अलावा अन्य ललित कलाऐं भी अधिकांशतः दूसरों का जन–मन रंजन करती हैं। इसका तात्पर्य यह नहीं कि कलाकार हृदयहीन रहकर कलाकृति सामने ला सकता है। काव्य और संगीत कला में तो हृदय और मानसिक पक्ष ही अधिक बलवार रहता है। संगीत में जब तक कलाकार को स्वयं आनन्द नहीं आएगा, तब तक दूसरों को भी आनन्द नहीं आएगा। इसीलिये कहा गया है कि गायन, वादन और नृत्य का प्रदर्शन पूरी एकाग्रता के साथ किया जाना चाहिए। संगीत–रत्नाकर के अनुसार गीत,वाद्यं तथा नृत्तं त्रय संगीत, मुच्यते अर्थात गीत, वाद्य और नृत्य तीनों ही संगीत कला के अन्तर्गत आते है। संगीत के इस

त्रिवेणी– संगम का विस्तार असीम, अछोर तथा अविनश्वर हैं मानव– जीवन में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि और प्रकृति के कण–कण में सगीत व्याप्त है।

कला मानव– संस्कृति की उपज है। पर्णकुटी से प्रासाद तक बढ़ते हुए मनुष्य ने केवल अपनी निरन्त वृद्धिमान आवश्यकताओं की ही पूर्ति नहीं की, अपितु अपने भीतर उत्कृष्ट सौन्दर्य चेतना का विकास किया और शारीरिक आवश्यकताओं से ऊपर उठकर मन की सन्तृप्ति को अपना लक्ष्य बनाया। पकवानों और सुगन्धित द्रव्यों का आविष्कार रंगोली की कला, चॉदी–सौने के आभूषणों का वैचित्रय, चित्र और मूर्ति का निर्माण कथा और काव्य ये सव मानव की निरन्तर विकसित कला–चेतना के ही विभिन्न स्वरूप हैं। मानसिक दृष्टि से आह्लाद कारक ये चेष्ठायें मनुष्य के भाव– जगत को निरन्तर तरलता और सुन्दरता प्रदान करती रही है। कला में क्षोम और श्रम का परिहार है, मन का रंजन और उद्बोधन है। कला की निर्मित में कलाकार को एक विशिष्ठ आनन्द की उपलब्धि होती है और आनन्द देना ही कला का उद्देश्य है।

उपर्युक्त ललिति कलाओं में संगीत को स्वर, लय, गति श्रवण आदि के कारण 'सर्वोच्च' कहा गया है, क्योंकि इसमें अन्य कलाओं की अपेक्षा अभूर्तता और सूक्ष्मता अधिक है तथा उपकरणों की संख्या भी कम है। ऐसी महत्वपूर्ण संगीत कला, जो मनुष्य को एकान्तिकता, एकाग्रता, निमग्नता और आनन्द की ओर ले जाती है। निःसन्देह मनुष्य की कार्यकुशलता, योग्यता और सामर्थ्य को बबढ़ाने वाली सिद्ध होती है ऐसी दशा में संगीत केवल एक विषय के रूप में नहीं अपितु एक उद्यम के रूप में अपनाया जाए तो निःसन्देह यह मानव– समाज को अनेक रोगों, विवादों, तनावों, थकान और श्रम के भार से मुक्त कर सकेगा।

लेकिन इसके लिये शोध की आवश्यकता है। राग–रागिनियों के स्वभाव समय और स्वरूप के विषय में संगीत–शास्त्र में बहुत–कुछ कहा गया है। यदि हम इसका उपयोग करते हुए औद्योगिक क्षेत्र में संगीत का सहयोग लें तो निःसंदेह मनुष्य की कार्यकुशलता, योग्तया और वृद्धि होती रहेगी।

अन्त में हम कह सकते हैं कि संगीत की राग–रागिनियों का मानव जीवन में सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। राग–रागिनियों के स्वभाव में बहुत कुछ कहा गया है यदि हम इसका उपयोग करते हुए मानव जीवन में संगीत का सहयोगब लें तो निःसंदेह मनुष्य का कार्यकुशलता, योग्यता तथा सामर्थ्य में वृद्धि होगी। संगीत के माध्यम से ही मनुष्य को परम शान्ति की अनुभूति होती है तथा नाद ध्वनि के द्वारा मनुष्य परमानन्द को प्रापत कर ईश्वर से साक्षात्कार करता है।